# Philosophy

## अरस्तू का द्रव्य विचार

1. अरस्तू के अनुसार सृष्टि के मूल में एक ऐसा द्रव्य है जो एक साथ अपने-आप में आक (विचार) और वस्तु को समाये हुए है। इस प्रकार प्लेटो के सत् और आभास का द्वैत समाप्त हो जाता है, किन्तु प्रयोजन बना रहता है।

संसार में प्रत्येक वस्तु और व्यक्ति द्रव्य है। इस प्रकार असंख्य द्रव्य है और ये ऊर्ध्वगामी क्रम में व्यवस्थित हैं। इनकी निचली सी निर्विकल्प पुद्‌गल और उच्चतम सीमा विशुद्ध आ ईश्वर है।

इन दोनों सीमाओं के बीच भौति वस्तुएँ वनस्पति जीवन, पशु जीवन, मानवीय सृ आदि स्थित हैं। इस प्रकार प्रत्येक व्यक्तिगत द्रव्य पुद्‌गल और आकार का सम्मिश्रण है।

## ख्यातिवाद (भ्रम संबंधी ज्ञानवाद)

20

वैध ज्ञान संशय, विपर्यय या विभ्रम से पृथक् होता है, फिर भी इस प्रकार के त्रुटिपूर्ण ज्ञान या विपर्ययात्मक ज्ञान के कारण की खोज की प्रक्रिया में अनेक सिद्धान्त भारतीय चिन्त में विकसित हुए इन्हें ख्यातियाँ कहा गया।

भ्रम त्रुटि या आभास के विषय शंकर का मत अनिर्वचनीय ख्यातिवाद है अर्थात् निश्चयात्मक रूप से कुछ भी नहीं कहा जा सक है।

यथार्थवादी न्याय का सिद्धान्त अन्यथा ख्यातिवाद है, अर्थात् एक वस्तु में दूसरी आरोपित वस्तु का ज्ञान होता है, जैसे रस्सी में साँप का ज्ञान।

प्रभाकर अख्यातिवाद के समर्थक हैं जो रस्सी में साँप देखने को अनुभव मानते हैं ज्ञान नहीं।

अनिर्वचनीय ख्यातिवाद में रस्सी में सं का स्रोत पूर्व स्मृति है जो आरोपित है। इस विपर्य को परम रूप से सत् या असत् नहीं कहा जा सकता – यह सर्वथा अनिर्वचनीय ज्ञान है। शंकर का मत पूर्ण और तर्क संगत है।

# नीतिशास्त्र

नीतिशास्त्र मानव-समाज के समस्त सदस्यों मध्य पारस्परिक आदर्श संबंधों की खोज का परिणा[illegible] इस प्रकार की खोज जड़, वनस्पति एवं पशुजगत [illegible] असंभव है। क्योंकि इन क्षेत्रों में विचारात्मक क्षमत[illegible] का अभाव है; फिर भी मानव की नैतिकता मात्र म[illegible] -समाज तक सीमित नहीं है। उसका संबंध व्याप[illegible] दृष्टि से पशु एवं वनस्पति जगत् से भी है। का[illegible] यह है कि समग्र जीवन के किसी भी अंग के प्र[illegible] मानव-व्यवहार को नैतिकता या अनैतिकता की प[illegible] में लाया जा सकता है।

नीतिशास्त्र आचरण में उचित या [illegible] का अध्ययन करता है। आचरण वह व्यवहार है [illegible] जिसका संबंध दूसरे के हित या अहित से हो। [illegible] समस्त प्राणी-मात्र के प्रति उत्तरदायित्व का ज्ञान ही नीतिशास्त्र है। उचित में नैतिक बाध्यता होती है और उस बाध्यता का स्वरूप शाश्वत होता है फि[illegible] भी इसकी अवहेलना की जा सकती है।

10

# चार्वाक – ज्ञान मीमांसा

चार्वाक के अनुसार यथार्थ ज्ञान का एक ही प्रामाणिक साधन है वह है प्रत्यक्ष (प्रत्यक्षमेकं प्रमाणम्)। चार्वाक प्रत्यक्ष के अतिरिक्त अन्य प्रमाणों की वैधता को स्वीकार नहीं करता है। चार्वाक के अनुसार कार्य कारण नियम के आधा पर भी व्याप्ति को स्थापित नहीं किया जा स क्योंकि कारण - कार्य का सार्वभौम नियम स्वयं ए व्याप्ति है। इस प्रकार चार्वाक का कथन है कि व्याप्ति की स्थापना किसी भी प्रमाण से संभव है। चूँकि व्याप्ति अनुमान का आधार है। अतः व्याप्ति के संदिग्ध होने से इस पर आधारि अनुमान भी निश्चयात्मक नहीं रह जाता।

चार्वाकों के अनुसार कभी-कभी अनुमान सच होता है पर कभी-कभी झूठ भी होता है। अतः अनुमान निश्चयात्मक सत्य का साधन नहीं है।